September 2019
Monthly Edition

Inbook's CAFE SOCIAL

The Demonic facts revealed

EXCLUSIVE

Article 370

Meet a daughter like her father

One Nation, One Tax, One Market

Special Edition PG 19

Inbook उदेश्य

गाँव से गाँव जुडे ओर दिल से जुडे दिल, पुरखो का नाम बड़े और ज्ञानोदय संग। आप सब सोच रहे होंगे लो आया एक और नया सोशल नेटवर्क मार्केट में। अभी जो है उसी से परेशान हे वक्त तो जाता ही है फूहड़ता सोच और समाज दोनों को बर्बाद कर रही है। कभी दंगा फैलाने में ये नेटवर्क अपना योगदान देते हे और कभी अश्लीलता। लेकिन हकीकत तो यही हैं के पैसा कमाने के सिवा इन नेटवर्क का कोई उद्देश्य नहीं होता। ना ही ये किसी रचनात्मकता में सहयोग देते हैं नहीं ही किसी सामाजिक बुराई को खत्म करने में। यह तक तो फिर भी ठीक हैं बात और बिगड़ जाती हैं जब अबोध बालक, बालिकाएं इन नेटवर्क के जाल में फसकर अपनी जिंदगी खराब करलेते है। आज जब कोई बच्चा अपने माता पिता का मोबाइल इस्तेमाल करते हैं तो माता पिता की धड़कने बढ़ जाती हैं, ये सोचकर के नजाने कब कोई अश्लील सामग्री प्रकट हो जाये उनके वाल पर, या कोई अधेड़ फर्जी प्रोफाइल बनाकर बच्चो को अपना शिकार न बनाले।

सही हैं न आप यही सोचरहे थे न ?
मगर मेरे मित्र कई बार हम गलत सोचते हैं कई बार गंदे पानी के तालाब में कमल भी खिलते हैं और अन्धकार को चीरते हुए रौशनी की वो एक किरण अपना वर्चस्वा कायम करती हैं ठीक उसी तरह जैसे घुप्प अँधेरे में प्रकट हुए एक किरण से ये पूरा संसार बना ।

Inbook एक सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्म हैं ये बात बिलकुल सही हैं मगर ये भी उतना ही सत्य हैं के ये कीचड़ में खिले उस कमल की तरह हैं जिसे आप अपने इष्ट को अर्पित करते हो। Inbook एक सोशल नेटवर्क हैं मगर येहा अशीलता नहीं परोसी जाती, येहा फूहड़ता नहीं बेचीं जाती येहा तो सिर्फ मिलेगा आप को एक स्वच्छ साफ्सुत्रा सोशल नेटवर्क जहा आप के बच्चे भी बिना किसी डर या अश्लीलता के चपटमे में आये बिना अपना योगदान दे सकते हैं और मनोरंजन भी करसकते है। ये नेटवर्क पूरी तरह भारतीय मूल्यों एवं धर्म की रक्षा करता हैं और बदले में आप से भी ये उम्मीद करता हैं के समाज के उत्थान में आप भी अपना बहुमूल्य योगदान बिना किसी झिझक के दे।

और हां हम सिर्फ एक सोशल नेटवर्क लाकर ही संतुष्ट नहीं हुए हैं हम और भी जो हमसे बन पड़ेगा करेंगे समाज की उन्नति केलिए और हमारे कुछ प्रयास तो समाज में अपना पैर पसार चुके हैं और तेजी से सफलता की और बढ़ रहे हैं उन ही में से एक हैं Inbook Cafe जो की हैं ज्ञानोदय की राह में उठाया गया एक अदना सा कदम ।

संपादकीय

इनबुक एक कोशिश तस्वीर बदलने की

आज समाज में तेजी से बदलाव हो रहा है। हम अब डिजिटल दुनिया में जीने लगे हैं। इस दुनिया की कोई सीमा नहीं है। यह असीमित है। यहां सबकुछ है। बस किसी मोबाइल, लैपटॉप, टैबलेट, पीसी इत्यादि पर एक 'टच' करने की जरूरत है। एक 'टच' हुआ नहीं कि मनमानी चीज मिल गई। सचमुच इस डिजिटल बनती दुनिया ने हमारे जीवन को कितना आसान बना दिया है। हम जादू की झप्पी से चीजों को पाने लगे हैं। इस तरक्की की लगातार दौड़ में सोशल नेटवर्क एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है, जहां सबकुछ है – अच्छा भी, बुरा भी। नजरदारी भी कुछ खास नहीं है। कहीं न कहीं यह भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से मेल नहीं खाती है। इसे ध्यान में रखते हुए एक अलग तरीके के सोशल नेटवर्क 'इनबुक' को लॉन्च किया गया है। यह नेटवर्क पूरी तरह से देसी है। भारतीय है। यह मिलावट से मुक्त है। इस पर पाश्चात्य संस्कृति का किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं है।

'इनबुक' को लॉन्च करने के पीछे एक बहुत बड़ा उद्देश्य है, जो सीधे आम जनता से जुड़ा हुआ है। इसका लक्ष्य आम लोगों को अपने सोशल नेटवर्क का हिस्सा बनाना है। इसमें जो भी सामग्री है, वह पूरी तरह से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को ध्यान में रखकर परोसी गई है। इसका अर्थ कतई नहीं है कि इसमें आधुनिकता नहीं है। यह पूरी तरह से आधुनिक है, डिजिटल है, फिर भी सामाजिक दायरे में है। इसमें दिमाग को दूषित करने की नहीं, बल्कि उसे टॉनिक देने की सामग्री है। इसे नकारात्मकता से मुक्त रखने का भरसक प्रयास किया गया है।

इनबुक सिर्फ डिजिटल प्लैटफॉर्म तक ही सीमित नहीं है। यह वास्तविक दुनिया से भी वास्ता रखता है। इसके तहत अनेक चौरिटेबल कार्य किए जा रहे हैं, जो समाज के उत्थान के प्रति समर्पित हैं। इसके लिए समाज में शिक्षा को बढ़ावा देकर उसे सशक्त बनाया जा रहा है। 'इनबुक' ने ग्रामीण क्षेत्रों में लाइब्रेरी खोलना शुरू किया है, जहां पर लोगों को पुस्तकों को पढ़ने के लिए उत्साहित किया जा रहा है। उन स्थानों पर 'इनबुक' अधिकांश सहयोग देकर पुस्तकों को उपलब्ध रहा रही है। इसकी पहल से उत्साहित होकर स्थानीय लोग भी इसमें योगदान दे रहे हैं। इसके साथ ही स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस एवं अन्य अवसरों पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

इनबुक अपनी पत्रिका के माध्यम से उन लोगों की सुध ले रहा है, जो वंचित हैं। समाज में उन्हें वह सम्मान नहीं मिला, जिसके वे सचमुच हकदार हैं। उदाहरण के तौर पर एक सफाई कर्मी को आम तौर पर हेय दृष्टि से देखा जाता है, लेकिन वह कुछ दिन काम पर न आए, तो उसकी अहमियत समझ में आती है। सफाई के बिना जीना दूभर हो जाता है। इसी प्रकार एक ट्रैफिक कांस्टेबल अगर ठीक से ट्रैफिक नियंत्रण न करे, तो सड़क पर चलना कठिन हो जाता है।

इस 'इनबुक' में हम उन दूर–दराज के क्षेत्रों की खबरों एवं समस्याओं को लेकर आ रहे हैं, जिसकी खबर कोई नहीं करता है। इसमें उन समस्याओं को प्रकाशित तो किया ही जाएगा, साथ ही इस पत्रिका की प्रति को विभिन्न विभागों, नौकरशाहों एवं सरकारी एजेंसियों के पास प्रेषित करने की भी योजना है। इसके माध्यम से हमारी कोशिश वंचित क्षेत्रों की तस्वीर को बदलना है।

यह सही है कि 'इनबुक' में ग्रामीण एवं दूरदराज के क्षेत्रों की समस्याओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा, लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि शहरांचलों को छोड़ दिया जाएगा। वह भी हमारी खबरों और लेखों का हिस्सा होंगे। इसके साथ ही इसमें स्वास्थ्य, खेल, राजनीति, आर्थिक, उद्योग–धंधे से जुड़े ढेरों लेख एवं स्तम्भ होंगे। इसे पाठकों की रुचि एवं उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किया जाएगा।

आशा है आपको यह अवश्य पसंद आएगा। हाँ, इसकी मूल बुनियाद पाठक ही हैं। इसलिए पाठक अपने विचारों और सुझावों से हमारी अच्छाईयों, कमियों एवं त्रुटियों से हमें अवश्य अवगत करायें, जिससे हम अगले अंक में आवश्यक सुधार कर सकें। उम्मीद है कि आपको यह अदना सा प्रयास अवश्य पसंद आएगा।

Surendra Kumar Pahwa

Ex Chief Commissioner of Income Tax,
Ex Vice Chairman, Settlement
Commission of India)

INDEX

1 Leader of the month
"A daughter like her father"
Denied being just another daughter of a minister, she decided to live in a village to serve people 6

2 परमवीर चक्र
विक्टोरिया क्रॉस से परमवीर चक्र तक
विक्टोरिया क्रॉस की शुरुवात १८५६ में हुई थी। आजादी के बाद से भारत सरकार अपने जल, थल और वायुसेना के रण बहादुरों को उनके अदम्य शोर्य के लिए परमवीर चक्र से सुशोभित करती है। 8

5 समाज में अप्रत्यक्ष सहयोग
"गर्व है, मैं सफाई कर्मी हूँ"
पहले लोग सम्मान से नही देखते थे। लेकिन विगत कुछ वर्षो से लोग सफाई को लेकर बहुत जागरूक हो गए है। 13

6 Model of the month
Male and Female
अगर आपको भी लगता हो की आपका photo इस मेग्जीन मे अए तो download Inbook app from playstore और post करें अपनी photo model group में। 14

7 Inbook : एक सफर
"मेरा अपना पुस्तकालय"
INBOOK NETWORK का महत्वपूर्ण कदम विभिन्न कस्बो में स्थित "मेरा अपना पुस्तकालय" की कुछ तस्वीरें 16

3 Article 370
आर्टिकल 370 एवं 35ए रू एक अभिशाप से मुक्ति
किसी भी देश के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि उसके ही एक प्रदेश में राष्ट्र का कानून लागू न हो। वहां के लोगों को समानता का अधिकार न हो। 10

4 Wardi
वर्दी मौसम नहीं देखती
हमें इस काम को करने में गर्व महसूस होता है हमे काम करते समय जिम्मेदारी का पूरा एहसास होता है। 12

8 Inbook Network
एक परिचय

INBOOK एक ऐसा स्वदेशी नेटवर्क है जो पूरी तरह से सुरक्षित एवं अश्लीलता से दूर है जिसे सभी उम्र वर्ग के लोग इस्तेमाल करके विविध जानकारिया प्राप्त कर सकते है। **18**

9 शूरवीरो की गाथा
हिन्दुंस्तान के इतिहास के बाजीराव अकेले ऐसे योद्धा थे जिन्होंने 41 लड़ाईया लड़ीं और एक भी नहीं हारीं।

महाराणा प्रताप और शिवाजी के बाद बाजीराव पेशवा का ही नाम आता है। जिन्होंने मुगलों से लम्बे समय तक लोहा लिया। **20**

10 Travel : Indore
रानी अहिल्या की नगरी इंदौर

आज इंदौर ने न केवल अपनी एक अलग पहचान बनायी है बल्कि खुद को तेजी से हो रहे विस्तार के अनुरूप बदला है। **22**

11 Legal
GST "ONE NATION, ONE TAX, ONE MARKET".

GST has replaced many indirect tax laws that previously existed in India. **25**

12 मेरी कलम से
प्रदीप जैन के विचार

श्री प्रदीप जैन के विचार। **28**

13 Government Schemes
आधार का आधार और उपयोगिता

आधार कार्ड भारत सरकार की एजेंसी UIDAI के द्वारा जारी किया जाने वाला एक पहचान है। **29**

14 सीखने की कुछ बाते
कविताएं और कहानियांबातें

INBOOK CAFÉ SOCIAL के पाठकों का योगदान **32**

Leader of the month

"A DAUGHTER LIKE HER FATHER"

It is generally said that the daughter's first love and idol is her father which is true in the case of Mrs. Rohini Khadse. The common phrase "Like father like daughter", fits perfectly in case of Mrs. Rohini Khadse aka Rohini Tai as natives of Khandesh (Jalgaon) fondly call her.

She inherited the spirit to serve people and make their lives better from her father Mr. Eknath Khadse or "NathaBhau". Being a daughter of a Leader of opposition in the assembly of Maharashtra and most senior Minister of Government of Maharashtra and advocate by profession, she had all kind of luxury available at her doorstep. She had opportunities to join big corporates as a law officer and live a luxurious life in Mumbai. But her plans were different and she denied being just another daughter of minister or leader in Indian politics.

Mrs. Khadse decided to take the tough road and chose to live in a village to serve people and uplift their standard of living of natives of Khandesh. She served them in the extreme hostile weather and her father supported her completely. Natha Bhau, on a number of occasions, admitted that Rohini is like him. He says that he feels sad that Rohini visits these villages even in 46-degree temperature but the sight of her glowing and smiling face after a hard day's work is worth everything for him.

Mrs. Rohini Khadse completed her graduation from prestigious Sydenham College of Commerce and Economics, Mumbai. Later she did her masters in Laws from ILS Pune. Apart from education, she is a good orator and brilliant writer.
Being an ardent lover of Lord Krishna, as she called herself, she is very modest and tribute all of her work and success to Lord Krishna. She says that it is not her but Lord Krishna who does everything and she is just a medium to flow-out His energy.

Since her college days, she has been actively involving in social work. With the guidance of her father, she is working for poor and needy. Especially for poor tribes (ADIWASI) who lives in the ranges of Satputara Mountain of Maharashtra which is known for its treasure of herbs. She informed & educated locals about the value of herbs under the banner of 'EknathraoKhadse Foundation' since 2004. Her consistent effort brought smiles on the faces of many Adiwasi people by uplifting the standard of living and providing education to their children and thus giving them a better and healthy lifestyle. Many big corporates of the world are now approaching them directly.
Once someone asked Rohini whether she is a social activist as people feel proud to call themselves or she is a daughter of a politician,

Mrs. Khadse decided to take the tough road and chose to live in a village to serve people and uplift their standard of living of natives of Khandesh.

she replied "I am neither a social activist nor daughter of a politician as my baba worked hard for the betterment of the poor and needy. I am part of my village or my society and I am not doing any "favor" on my fellow brothers, sisters, and elders. I do it for my happiness as I can't have my dinner if I see "ANNADATA" or "NATIVES" of village dying with hunger or going miles for a bucket of water. I talk to myself and try to find out ways to help them. The more I work for them, the more my determination strengthens to serve. " She further added politics is a means for me to serve people and I am highly inspired by Mao Zedong who said, "Never benefit oneself always

She is one of the flag bearers of "Save the daughters Movement" of Prime Minister Shri Narendra Modi and is actively involved in educating people to save daughters and educate them. Apart from her father, she admires Prime Minister Shri Narendra Modi and highly influenced by his passion and burning desire to serve India. In the words of Rohini "There can't be another person who can be compared with Mr. Modi who gave up on everything for his nation and doesn't keep even a single moment for himself. Further, I am not his admirer just because my father belongs to BJP but he is the best Prime Minister our country ever had. Not only me but any youth can fall for him."

Am I a corporate woman or traditional woman or politician?
Haha. I am a traditional woman with a corporate flavour. I believe in my culture and traditions and I get power & positivity from it.
Being a traditional woman doesn't mean I can't manage corporate. Being a chairman of the bank, I have to keep myself updated with all the banking regulations and administration, being a chairman of the sugar mill; I have to keep eyesight from the procurement of sugarcane till the production of sugar. Being a chairman of a cotton mill, I have to deal with cotton seeds till the spindle of cotton.

Sometimes people get surprised a bit of how I manage so many works efficiently. It can be difficult for other people but for me, it is a bit easy as I do believe in people and invest in human assets instead of making investments in property, money or ornaments. This is a simple mantra of my success.

"Politics is a means for me to serve people and I am highly inspired by Mao Zedong who said, "Never benefit oneself always benefit others."

परमवीर चक्र

विक्टोरिया क्रॉस से परमवीर चक्र तक

विक्टोरिया क्रॉस से परमवीर चक्र तक

जैसा की सर्व विदित है, परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च शोर्य सैन्य अलंकरण है जो दुश्मनो की उपस्थिति में उच्च कोटि के पराक्रम एवं त्याग के लिए प्रदान किया जाता है। परमवीर चक्र के इतिहास के बारे में कम ही लोग जानते है। आजादी से पूर्व ब्रिटिश राज में भी शूरवीरता के लिए अलंकरण दिए जाते थे तब ब्रिटेन की रानी के नाम पर "विक्टोरिया क्रॉस" के नाम से इसे जाना जाता था।

विक्टोरिया क्रॉस सन् 1856 में रानी विक्टोरिया ने शुरू किया था। इस सम्मान को शुरू करने के पीछे यही मकसद था की देश के शूरवीरो को सम्मानित किया जा सके। जब भारत ब्रिटेन के अधीन था तब भारत में ब्रिटिश सेना के रणबाकुरो को सम्मान देने के लिए शुरू किया था।

आजादी और परमवीर चक्र तक

आजादी के बाद से लेकर आज तक भारत में कई युद्ध हुए है। जिनमें भारतीय सेना ने अपने अदम्य साहस और पराक्रम का परिचय दिया है द्य भारत सरकार सेना के शूरवीरो को उनके उच्च कोटि के शोर्य व त्याग के लिए परमवीर चक्र से सुशोभित करती है। यह भारत का सर्वोच्य सैन्य अलंकरण है। 26 जनवरी 1950 में जब भारतीय संविधान शुरू हुआ तब परमवीर चक्र की भी शुरुवात हुई। इसके पुरुस्कार के पात्र भारतीय सेना के किसी भी अंग के अधिकारी या कर्मचारी होते है द्य इसे देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न के बाद सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार माना जाता है।

कुछ भारतीय जिन्हें विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया

श्री गोविन्द सिंग जी	1917	प्रथम विश्व युद्ध
श्री बादलू सिंग जी	1918	प्रथम विश्व युद्ध
श्री चट्टा सिंग जी	1918	प्रथम विश्व युद्ध
श्री ईशर सिंग जी	1921	प्रथम विश्व युद्ध
श्री प्रकाश सिंग जी	1943	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री नन्द सिंग जी	1944	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री राव अब्दुल हाफिज खान जी	1944	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री उमराव सिंग जी	1944	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री राम स्वरूप सिंग जी	1944	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री नामदेव जादव जी	1945	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री करमजीत जुडगे जी	1945	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री शेर शाह जी	1945	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री गिना सिंग जी	1945	द्वितीय विश्व युद्ध
श्री प्रकाश सिंग जी	1945	द्वितीय विश्व युद्ध

आइये जानते है सरदार ईशर सिंग जीके बारे मे

सरदार ईशर सिंग जी (तब 25) 28 वे पंजाबियों में एक सिपाही थे। वजीरिस्तान अभियान के दोरान भारतीय सेना का अंग थे। 10 अप्रेल 1921 को उनकी उल्लेखनीय योगदान के लिए विक्टोरिया क्रॉस से नवाजा गया था द्य लोग अक्सर हवलदार ईश्वर सिंग और सिपाही ईशर सिंग में भ्रमित हो जाते है जो सारागढ़ी में लडे थे।

हर साल 12 सितम्बर को, हम 21 सिख सैनिकों के बलिदान को याद करते है जिनका नेतृत्व हवालदार ईशर सिंग जी कर रहे थे। लेकिन कुछ लोग अज्ञानतापूर्वक कैप्टन ईशर सिंग जी की तस्वीर साझा कर देते है। ईशर सिंग नाम एक होने की वजह से यह भांति जन्मी दोनों की परिस्थितिया और वीरता का कार्य भी लगभग सामान ही था। सरदार बहादुर ईशर सिंग जी को ब्रिटिश सेना ने जनजातियो के खिलाफ लड़ने के लिए विक्टोरिया क्रॉस दिया था। किन्तु सरदार बहादुर कैप्टन ईशर सिंग जी के परिवार का दावा है कि एक सैन्य अभियान के दोरान बहादुरी के कार्य के लिए उन्हें विक्टोरिया क्रॉस प्राप्त हुआ था वो पहले गैर ब्रिटिश सैनिक थे जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ अभी इसका सत्यापन होना बाकी है। फिर भी इस में कोई संदेह नही है की 1921 में समाचार पत्रों की रिपोटो में उनकी वीरता की विधिवत स्वीकार किया गया है।

वजीरिस्तान अभियान ब्रिटिश और भारतीय सेना द्वारा चलाये जाने वाला एक सैन्य अभियान था जिसमे इस क्षेत्र में रहने वाले स्वतंत्र आदिवासियों के खिलाफ यह अभियान था। तीसरे एंग्लो अफगान युद्ध के बाद फैली अशान्ति के बाद 1919–20 में यह पारिस्थति उत्पन्न हुई। थी ईशर सिंग ने कप्तान के पद पर रहते हुए द्वितीय विश्व युद्ध में कार्य भी किया। उन्हें विक्टोरिया क्रॉस के अलावा प्रतिष्ठित ऑडर ऑफ ब्रिटिश इण्डिया, फर्स्ट क्लास से सम्मानित किया गया जिससे उन्हें सरदार बहादुर की उपाधि भी प्रदान के गई।

कुछ भारतीय जिन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गयारू

मेजर सोमनाथ शर्मा मरणोपरांत

लांस नायक करम सिंह

सेकेंड लेफ्टीनेंट राम रघोबा राणे

नायक यदुनाथ सिंह मरणोपरांत

कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह मरणोपरांत

कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया मरणोपरांत

मेजर धनसिंह थापा

मेजर शैतान सिंह मरणोपरांत

कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद मरणोपरांत

लेफ्टीनेंट कर्नल आर्देशिर तरपोर मरणोपरांत

लांस नायक अलबर्ट एक्का चौंदहवीं बटालियन, बिहार रेजीमेंट मरणोपरांत

फ्लाईंग आफिसर निर्मलजीत सिंह सेखो मरणोपरांत

लेफ्टीनेंट अरुण क्षेत क्षेत्रपाल पूना हार्स मरणोपरांत

मेजर होशियार सिंह तीसरी बटालियन, बाम्बे ग्रेनेडियर्स बसंतार नदी, शकरगढ़ सेक्टर

नायब सूबेदार बन्ना सिंह आठवीं बटालियन, जम्मू कश्मीर लाइट इनफेन्ट्री जीवित

मेजर रामास्वामी परमेश्वरन आठवीं बटालियन, महार रेजीमेंट मरणोपरांत

लेफ्टीनेंट मनोज कुमार पांडे प्रथम बटाल बटालियन, 11 गोरखा राइफल्स मरणोपरांत

ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव अठारहवीं बटालियन, जीवित

राइफलमैन संजय कुमार तेरहवीं बटालियन, जम्मू कश्मीर राइफल्स जीवित

कैप्टन विक्रम बत्रा तेरहवीं बटालियन, जम्मू कश्मीर राइफल्स मरणोपरांत

आने वाले अंकों में जान ने की कोशिश करेंगे हर जाबाज की कहानी।

आर्टिकल 370 एवं 35ए एक अभिशाप से मुक्ति

किसी भी देश के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि उसके ही एक प्रदेश में राष्ट्र का कानून लागू न हो। वहां के लोगों को समानता का अधिकार न हो। वहां दोहरी नागरिका चले। यहां तक कि उस राष्ट्र के ध्वज और प्रतीकों का अपमान भी कोई अपराध न हो। ऐसा लगे कि यह अपने देश में होते हुए भी बेगाना–बेगाना सा है। कुछ समय पहले तक हमारे जम्मू–कश्मीर का यही हाल था। यहां ऐसा ही बहुत कुछ होता था, जो एक राष्ट्र, एक विधान और एक संविधान की शक्ति को कमजोर करता था। इस धरती के स्वर्ग में कुछ लोगों को छोड़कर अधिकांश लोगों का जीवन नारकीय था। मुटठी भर नेता अपनी स्वार्थसिद्धी के लिए लोगों के जीवन और भविष्य से खिलवाड़ कर रहे थे। ऐसे में 5 अगस्त 2019 का दिन ऐतिहासिक रहा। भारत सरकार ने जम्मू–कश्मीर के लोगों के जीवन में आशा की लौ दिखाते हुए वहां आर्टिकल 370 और 35ए को खत्म कर दिया। हालांकि, कुछ सुविधाभोगी नेता, जो हमेशा से वहां के लोगों को बरगलाने और अपना उल्लू सीधा करने में लगे थे, उन्हें यह नागवार गुजरा है। सरकार इस निर्णय को लेने के साथ ही सभी ऐहतियाती कदम उठाये है, सुरक्षा को प्राथमिकता दी है, जिससे जान–माल का नुकसान न हो, लोगों का भरोसा जीतने की कोशिश की जा रही है, क्योंकि उन्हें पहले से ही बरगलाकर रखा गया है। उन्हें अपना हित–अहित तक पता नहीं है। उन्हें यह भी पता नहीं होता है कि वह क्यों भारत का विरोध करते हैं, क्यों पत्थरबाजी करते हैं, बस उनके कुछ नेता उन्हें भड़काते हैं, उनका ब्रेनवाश करते हैं और वह देश विरोधी बन जाते हैं। हालांकि, अब वहां धीरे–धीरे जिंदगी सामान्य हो रही है।

हालांकि, हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि जम्मू कश्मीर के लिए दोनों आर्टिकल कैसे अभिशाप थे। इस क्षेत्र में अशांति का कारण यही थे। इन्हीं दोनों के कारण जम्मू–कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा हासिल था, जिसकी आड़ में कश्मीरी अलगाववादी पाकिस्तान की शह पर कश्मीरी नौजवानों को बरगलाकर कश्मीर की आजादी के नाम पर आतंकवाद की ओर धकेल रहे थे। आर्टिकल 35–ए की आड़ में तो जम्मू–कश्मीर की लड़कियों का ही नहीं बल्कि भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से आये शर्णार्थियों से भी भेदभाव किया जाता रहा है।

दरअसल इस सबका सबसे ज्यादा फायदा दशकों से पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती का परिवार उठाता आ रहा था। उनकी पार्टियों और अलगाववादियों को ही इससे तकलीफ है। यहां कानून–व्यवस्था राज्य सरकार का विषय था और सैन्य बलों की संभावित तैनाती भी राज्य सरकार की सहमति से ही होती थी। यहां तक कि सैन्य बलों के साथ मुठभेड़ों में मरने वाले आतंकवादियों के जनाजे में बड़े–बड़े ईनामी आतंकवादी हथियारों का प्रदर्शन करते हुए खुलेआम शामिल हो रहे थे। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि इसकी स्थानीय प्रशासन और विशेषकर पुलिस को जानकारी होगी ही, लेकिन उनका मूक समर्थन उन्हें हासिल था और यही कारण था कि जब सैन्य बलों को आतंकवादियों के छुपने का पता चलता है और मुठभेड़ शुरू होती है तो पत्थरबाजों की भीड़ इसमें बाधा डालने का प्रयास करती थी।

दरअसल 1947 में बंटवारे के दौरान पाकिस्तान से लाखों लोग शरणार्थी बनकर भारत आए थे। यह लोग देश के कई हिस्सों में बस गये थे और आज वहीं के नागरिक बन चुके हैं। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, चेन्नई, उत्तर प्रदेश या जहां कहीं भी यह लोग बसे, आज वहीं के स्थायी निवासी बन गये हैं। जम्मू–कश्मीर में कई दशक पहले बसे यह लोग आज भी शरणार्थी ही कहलाते हैं और तमाम मौलिक अधिकारों से वंचित हैं। 1947 में हजारों लोग पश्चिमी पकिस्तान से आकर जम्मू में बसे थे। इन हिंदू परिवारों में लगभग 80 प्रतिशत दलित थे। अब तक इन्हें न तो स्थानीय चुनावों में वोट डालने का अधिकार था, न सरकारी नौकरी पाने का और न ही सरकारी कॉलेजों में दाखिले का अधिकार दिया गया था।

यह स्थिति सिर्फ पश्चिमी पकिस्तान से आए इन हजारों परिवारों की ही नहीं बल्कि लाखों अन्य लोगों की भी थी। इनमें गोरखा समुदाय के वह लोग भी शामिल हैं जो बीते कई सालों से जम्मू–कश्मीर में रह रहे थे। इनसे भी बुरी स्थिति वाल्मीकि समुदाय के उन लोगों की थी जो 1957 में यहां बसाये गये थे। उस समय इस समुदाय के करीब 250 परिवारों को पंजाब से जम्मू–कश्मीर बुलाया गया था। इन्हें विशेष तौर से सफाई कर्मचारी के तौर पर नियुक्त करने के लिए यहां लाया गया था। बीते 60 सालों से यह लोग यहां सफाई का काम कर रहे हैं। लेकिन इन्हें भी जम्मू–कश्मीर का स्थायी निवासी नहीं माना जाता था। इनके बच्चों को सरकारी व्यावसायिक संस्थानों में दाखिला नहीं दिया जाता था और किसी तरह अगर कोई बच्चा किसी निजी संस्थान या बाहर से पढ़ भी जाए तो यहां उन्हें सिर्फ सफाई कर्मचारी की ही नौकरी मिल सकती थी।

यह भी बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति थी कि यहां रहनेवाले भारत के नागरिक तो थे, लेकिन जम्मू–कश्मीर उन्हें अपना नागरिक नहीं मानता था। इन्हें लोकसभा चुनावों में वोट डालने का अधिकार था, लेकिन जम्मू–कश्मीर में पंचायत से लेकर विधानसभी तक किसी भी चुनाव में ये वोट नहीं डाल सकते थे। इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती थी कि यह लोग भारत के प्रधानमंत्री तो बन सकते थे लेकिन जिस राज्य में कई सालों से रह रहे थे वहां के ग्राम प्रधान भी नहीं बन सकते थे।

सबसे दुखद बात यह है कि सन् 1954 में तत्कालीन राष्ट्रपति के आदेश के जरिए भारत के संविधान में एक नया आर्टिकल 35–ए जोड़ दिया गया। यही यहां के लाखों लोगों के लिए अभिशाप बन गया। अनुच्छेद 35–ए जम्मू–कश्मीर की विधानसभा को यह अधिकार दिया कि वह श्स्थायी नागरिकश की परिभाषा तय कर सके और उन्हें चिन्हित कर विभिन्न विशेषाधिकार भी दे सके। इसी अनुच्छेद से जम्मू और कश्मीर की विधानसभा ने कानून बनाकर लाखों लोगों को शरणार्थी मानकर हाशिये पर धकेल दिया ताकि उनकी राजनीति पर कोई आंच न आये।

हमें यह भी जानना चाहिए कि भारतीय जन संघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने आर्टिकल 370 के खिलाफ लड़ाई लड़ने का बीड़ा उठाया था। वह इस संवैधानिक प्रावधान के खिलाफ थे और उन्होंने कहा था कि इससे भारत छोटे–छोटे टुकड़ों में बंट रहा है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी 1953 में भारत प्रशासित कश्मीर के दौरे पर गए थे और वहां कानून लागू था कि भारतीय नागरिक जम्मू–कश्मीर में नहीं बस सकते और वहां प्रवास के दौरान उन्हें अपने साथ पहचान पत्र रखना जरूरी था। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने तब इस कानून के खिलाफ भूख हड़ताल की थी। वह जम्मू–कश्मीर जाकर अपनी लड़ाई जारी रखना चाहते थे लेकिन उन्हें जम्मू–कश्मीर के भीतर घुसने तक नहीं दिया गया था और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 23 जून 1953 को हिरासत के दौरान ही उनकी संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई थी। वैसे, आर्टिकल 370 में समय के साथ कई बदलाव भी हुए। 1965 तक वहां राज्यपाल और मुख्यमंत्री नहीं होता था। उनकी जगह सदर–ए–रियासत और प्रधानमंत्री होता था। इसे बाद में बदला गया। इसी तरह के कई और महत्वपूर्ण बदलाव हुए। हालांकि बाद में प्रवास के दौरान पहचान पत्र रखने के प्रावधान को बाद में कानूनन रद्द कर दिया गया, लेकिन दूसरे नियम कानून समस्या बने हुए थे। उनपर भी एक नजर डालना जरूरी है।

अनुच्छेद 370 के प्रावधानों के अनुसार, संसद को जम्मू–कश्मीर के बारे में रक्षा, विदेश मामले और संचार के विषय में कानून बनाने का अधिकार था, लेकिन किसी अन्य विषय से संबंधित कानून को लागू करवाने के लिए केंद्र को राज्य सरकार की मंजूरी चाहिए थी। इसी विशेष दर्जे के कारण जम्मू–कश्मीर राज्य पर संविधान की धारा 356 लागू नहीं होती थी। राष्ट्रपति के पास राज्य के संविधान को बर्खास्त करने का अधिकार नहीं था। 1976 का शहरी भूमि कानून राज्य पर लागू नहीं होता था। भारत के दूसरे राज्यों के लोग जम्मू–कश्मीर में जमीन नहीं खरीद सकते थे। भारतीय संविधान की धारा 360 के तहत देश में वित्तीय आपातकाल लगाने का प्रावधान है। यह जम्मू–कश्मीर पर लागू नहीं होता था। धारा 370 के तहत कुछ विशेष अधिकार कश्मीर की जनता को मिले हुए थे। इस धारा की वजह से कश्मीर में आरटीआई (RTI) और सीएजी (CAG) जैसे कानून लागू नहीं होते थे। जम्मू–कश्मीर के नागरिकों के पास दोहरी नागरिकता होती थी। जम्मू–कश्मीर का अलग राष्ट्रध्वज था। जम्मू–कश्मीर की विधानसभा का कार्यकाल 6 वर्षों का होता था। जबकि भारत के अन्य राज्यों की विधानसभाओं का कार्यकाल 5 वर्ष का था।

इसके साथ ही, जम्मू–कश्मीर के अंदर भारत के राष्ट्रध्वज या राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान अपराध नहीं होता था। भारत के उच्चतम न्यायालय के आदेश जम्मू–कश्मीर के अंदर मान्य नहीं थे। भारत की संसद को जम्मू–कश्मीर के संबंध में सीमित क्षेत्र में कानून बना सकती थी। जम्मू–कश्मीर की कोई महिला यदि भारत के किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से विवाह कर ले तो उस महिला की नागरिकता समाप्त हो जाती थी। इसके विपरीत यदि वह पकिस्तान के किसी व्यक्ति से विवाह कर ले तो उसे भी जम्मू–कश्मीर की नागरिकता मिल जाती थी। 35। से जम्मू–कश्मीर के लिए स्थायी नागरिकता के नियम और नागरिकों के अधिकार तय होते थे। 14 मई 1954 के पहले जो कश्मीर में बस गए थे, उन्हीं को स्थायी निवासी माना जाता था। जो जम्मू–कश्मीर का स्थायी निवासी नहीं था, राज्य में संपत्ति नहीं खरीद सकता था। सरकार की नौकरियों के लिए आवेदन नहीं कर सकता था। वहां के विश्विद्यालयों में दाखिला नहीं ले सकता था, न ही राज्य सरकार की कोई वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकता था।

ऐसे में अनुच्छेद 370 और 35ए के समाप्त होने से जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के लोगों को निश्चित रूप से नवजीवन मिलेगा। इसके लिए वहां के लोगों को इसे समझना और बरगलानेवाले नेताओं से दूर रहना जरूरी है। इससे एक ओर जहां घाटी में शांति स्थापित होगी, वहीं दूसरी ओर विकास की बयार भी बहेगी।

Wardi

वर्दी मौसम नहीं देखती

अपने हर संस्करण में हम बात करेंगे कुछ ऐसे लोगों से जो की आपकी और हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को काफी हद तक आसान बनाते हैं। इसी श्रृंखला में इस बार हम जानेंगे ट्रैफिक इंस्पेक्टर आशिक़ खान से उनके संघर्ष के बारे में।

आपका नाम?

मेरा नाम आशिक़ के खान हैं।

आप कितने वषी से सर्विस में हैं?

मैं सन् 2003 से सेवा में हूँ।

उस हिसाब से तक़रीबन 16 वर्ष की सर्विस हो गयी है मेरी।

काम को लेकर आपकी क्या–क्या ज़िम्मेदारियाँ रहती हैं ?

जब हम ड्यूटी पर रहते हैं तो तरह–तरह की ज़िम्मेदारियाँ रहती हैं। हर वक़्त चौकन्ना रहना पड़ता हैं। बड़ी–बड़ी गाड़ियों से दिनभर घीरे रहते हुए, ट्रैफिक नियमों का लोगो से पालन करवाना और साथ ही अपनी जान की खुद रक्षा करना हमारे काम का एक छोटा सा पहलु है। कई बार शहरी सीमा में जो गाड़ियां नहीं आनी चाहिए ,वो आ जाती हैं, उनको भी उस सीमा से बहार रखना, ऐसा न हो पर अगर किसी का एक्सीडेंट हो जाता हैं तो हम उसे भी चालू ट्रैफिक में सँभालने की कोशिश करते हैं।

काम को सुचारु रूप से करने में आने वाली परेशानियों के बारें में कुछ बताएं?

वैसे तो हर पेशे के कुछ नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलु होते हैं, लेकीन हम लोग अपनी ज़िम्मेदारी से इस काम को करते हैं। कभी–कभी कुछ लोग गलत भाषा का प्रयोग करते हैं जो कि सही नही है। लेकिन लोगों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी पहचान हमारी वर्दी से है।

यातायात के इस काम को करने में आप कैसा महसूस करते हैं?

हमें इस काम को करने में गर्व महसुस होता है। हमें काम करते समय ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास रहता है, और यकीन मानिए इससे बड़ कर कोई खुशी नहीं होती।

लोगों का क्या नज़रियाँ है ट्रैफिक नियमों के प्रति?

यह देखा गया है कि लोगों में अभी भी ट्रैफिक नियमों को लेकर इतनी जागरूकता नहीं आयी है जितनी होनी चाहिए।आज इतनी तकनिकी उन्नति के बावजूद लोग नियमों का उल्लंघन करते है।हर व्यक्ति को जल्दी रहती हैं और इसी के चलते नियमों को नहीं मानते जो कई बार दुर्घटना का कारण होता हैं।

किसी तरह के और सुधार किये जाने चाहिए जिससे की काम को करने में आसानी हो?

तकनीक तौर पर चाहे कितने ही सुधार कर लिए जायें उससे कुछ विशेष फर्क नहीं आएगा, जब तक लोगों में अपनी खुद की व दुसरों की जिन्दगी को लेकर ज़िम्मेदारी नहीं आ जाती।हम दिनभर हर मौसम में खड़े भी रहे पर लोग जब तक नियमों का पालन नहीं करेंगे समस्या हल नहीं हो सकती।हम जितना ट्रैफिक को कण्ट्रोल कर सकेंगे, हमेशा करेंगे।

लोगों को ट्रैफिक को लेकर क्या सुझाव देना चाहेंगे?

लोग अगर नियमों को समझेंगे तो यह जान पाएंगे की सारे नियम उनकी सुरक्षा के लिए ही बनाये गए हैं। अगर नियमों का पालन ठीक से करेंगे तो आधे से ज़्यादा समस्या हल हो जाएगी।

समाज में अप्रत्यक्ष सहयोग

“ गर्व है, मैं सफाई कर्मी हूँ ”

आपका नाम ? यह काम आप कबसे कर रहे है?

कमला इस काम में इन्हे कार्यरत रह कर 15 साल हो गए है।

इस काम को करने में आपको किस तरह की परेशानियां आती है?

आज से 5 साल पहलें बहुत परेशानियां होती थी। अब परेशानियां कम हो गयी है। हर जगह कचरा पेटी हो गयी है। नगर निगम की गाड़ियां हर घर चलती है। पहले से कहीं ज़्यादा उपकरण और संसाधन आज की तारीख़ में नगर निगम में उपलभ्ध है।

इस काम को लेकर लोगों का क्या नज़रियां रहता है?

इस काम को पहले लोग सम्मान से नहीं देखते थे। लेकिन कुछ सालों से लोग सफ़ाई को लेकर बहुत जागरूक हो गए है। अब उन्हें भी लगता हैं कि हम लोग जो महनत करते है वह देश के लिए बडा काम है।

सफाई के इस काम को करने में आप कैसा महसूस करते है? क्या आप यह सोचते हैं कि यह काम गन्दा है?इसको हम क्यों करें?

मुझे गर्व है कि देश का ऐसा काम में करती हूँ। जिससे की लोगों को बिमारियों से बचाया जा सकता है। प्रदुषण होने से रोकने का काम हम लोग करते है।

सफाई को लेकर लोगों को कोई संदेश या सुझाव देना चाहेंगे?

बस मैं यहीं कहना चाहती हूँ की यह हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह स्वच्छता मे सहयोग करे।

ऐसे कौन कौनसे काम या सुधर किये जाये जिससे कि आपकी इन परेशानियों को काम किया जा सकें?

आज का समाज वैसे भी समझदार हो गया है। फिर भी अगर हर इंसान कचरा सही जगह पर फेके। सरकार ने हर जगह बॉक्स लगाए है, ताकि
रोड पर कचरा न फेले। लोगों को जागरूक करने के लिए और अभियान चलाये जाने चाहिए।

इस काम के लिए सरकार की और से वो सारे संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं जिनकी ज़रूरत होती हैं आपके काम करने में?

जी बिलकुल,सरकार हमें नए नए उपकरण उपलब्ध करवा रही है जिससे हमें काम करने में आसानी हो रहीं है। आधुनिक संसाधन उपलब्ध है और तो और सभी उपकरण नए है।

Name - Nisarg Patil
Place - Indore

Model of the month –

MALE

Inbook संस्करण का यह पेज **Model of the Month** के लिए रखा गया है जहॉ की **Inbook app** पर **model group** मे **post** गई **photo** मे से चयनित की गई किसी एक **photo** को हम यहा प्रकाशित करेगें। अगर आपको भी लगता हो की आपका **photo** इस मेग्जीन मे आऐ तो आज हि **download Inbook app from playstore** और **post** करें अपनी **photo model group**

Model of the month –

FEMALE

दोस्तो यह पेज **Model of the Month** के लिए रखा गया है जो की **Inbook app** पर **model group** मे **post** गई **photo** मे से चयनित की गई **photo** को हम यहा देगें। अगर आपको भी लगता हो की आपका **photo** इस मेग्जीन मे अए तो **download Inbook app from playstore** और **post** करें अपनी **photo model group** में।

Name - Vidhu Modi
Place - Bhopal

“मेरा अपना पुस्तकालय„

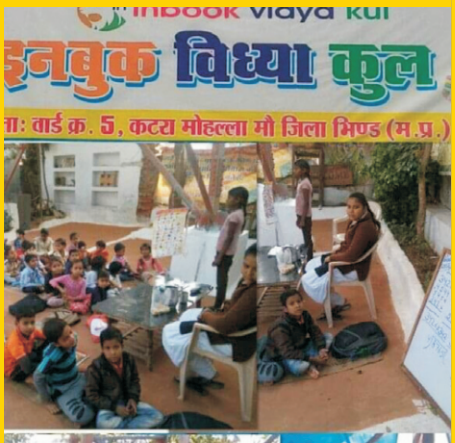

INDORE INSTITUTE OF LAW℠

(Affiliated to DAVV & Bar Council of India, New Delhi)

INTERNATIONAL CONFERENCE ON

ALTERNATIVE DISPUTE RESOLUTION

TOWARDS A ROAD LESS TRAVELLED

INDORE INSTITUTE OF LAW

Gendalal Bam Parisar : Opp. IIM, Rau Pihampur Road, Village Dehri, Rangwasa,
Indore (M.P.) 453331 | Email: conference@indoreinstituteoflaw.org

Inbook Network: एक परिचय

Inbook क्या हैं :

Inbook Network: ———

(MERA DESH MERA NETWORK)

इनबुक सोशल वर्क और पैशन एंड मिशन के कांसेप्ट पर बना एक मोबाइल एप्लिकेशन है, जो एंड्राइड प्लेटफार्म पर कार्य करता है।यह भारत में ही भारतीय नेटवर्क बनाने के उद्देश्य से बनाया गया है ,यह फेसबुक की तरह ही है लेकिन उससे भिन्न कई फायदों के साथ बनाया स्वदेशी नेटवर्क है जो पूरी तरह से सुरक्षित है INBOOK भारत का ऐसा नेटवर्क है जिसे सभी उम्र वर्ग के लोग चला सकते है ,तथा विविध जानकारिया प्राप्त कर सकते है, इस अप्लीकेशन का उद्देश्य भारत का अपना स्वच्छ नेटवर्क बनाना जो अश्लीलता से दूर हो यहाँ विभिन्न प्रकार के लाभ भी यूजस को दिए जाते हैं ,समय–समय पर INBOOK विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन करता है साथ ही वर्ष भर होने वाले फायदे अलग हैं।

INBOOK से होने वाले फायदे :

INBOOK एक नेटवर्क हे जिसके माध्यम से इसके सदस्य अपने मित्रो परिवार और परिचितों के साथ संपर्क रख सकते हे जिसमे लाइक,शेयर ,कमेंट, टैग फोटो/वीडियो अपलोड /पेज ,ग्रुप ,फ्रेंड्स ,चैट,/मेसेजस किया जाता है ! INBOOK को चलाने के साथ –साथ ही आपको फायदे भी होंगे यहाँ किसी भी लाइक,शेयर ,कमेंट ,पोस्ट ,वीडियो ,या अन्य कुछ जानकारी पोस्ट करने पर आपको CREDIT पॉइंट मिलेंगे ये क्रेडिट पॉइंट आपके ही Inbook अकाउंट में दिखेंगे !आप इन क्रेडिट पॉइंट को आपके अधिकृत INBOOK सेंटर या व्यक्ति से केश करवा सकते है या खरीदी कर सकते है !

INBOOKखभारत का ऐसा नेटवर्क है जिसे सभी उम्र वर्ग के लोग चला सकते है ,तथा विविध जानकारिया प्राप्त कर सकते है, इस अप्लीकेशन का उद्देश्य भारत का अपना स्वच्छ नेटवर्क बनाना जो अश्लीलता से दूर हो यहाँ विभिन्न प्रकार के लाभ भी यूजर्स को दिए जाते हैं। INBOOKखनेटवर्क समय–समय पर अनेक प्रतियोगिता आयोजित करता है जैसे MRखMS. INBOOKERखवर्ष में दो बार यह प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं।

- INBOOK नेटवर्क समय–समय पर अनेक प्रतियोगिता आयोजित करता है जैसे MR/MS.INBOOKER वर्ष में दो बार यह प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं और इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए Inbook में प्रतिभागी को वोट अपील करना होती हे ,जोभी सबसे अधिकतम वोट के साथ आता हे उसे INBOOK अवार्ड और प्राइस मनी दी जाएगी जो रू 11000 से लेकर रू 25000 तक हैं।

- Inbook पुस्तकालय हैं वंहा आवश्यक कुछ क्षेत्रों में स्कूल भी खोले गए।

Inbook प्रतिवर्ष खेल/शिक्षा के लिए भी प्रतियोगिता का आयोजन करता हैं जिसमे ग्रामीण क्षेत्रों में खेलो और कला क्षेत्र के छात्र जो अपनी प्रतिभा दिखाना चाहते हैं वह छात्र यहाँ अपना नॉमिनेशन देकर इस खेल और कला सम्बन्धी क्षेत्र में अपना नाम कर सकते हैं। यह एक ऐसा प्लेटफार्म हैं जहा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सम्बन्धी समस्याओं को देखते हुए महिलाओं के लिए लघु उद्योग एवं जॉब सम्बन्धी प्रोग्राम भी शुरु किये गए।

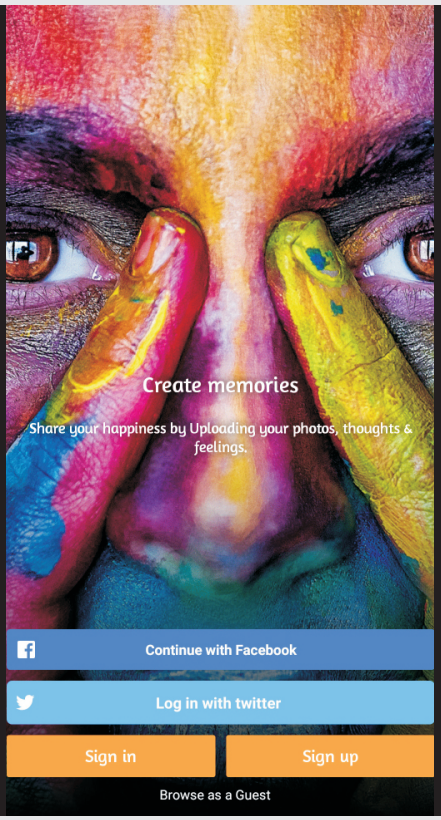

INBOOK

खखखखखखखखखखख?

- INBOOK AAP मोबाइल में डाउनलोड करके INSTALL करे इसे GOOGLE PLAYSTORE से DOWNLOAD करे !
- अब इस AAP को ओपन करे और CREATE NEW INBOOK ACCOUNT पर CLICK करे !
- आपका GMAIL ID या मोबाइल नम्बर दोनों में कोई भी एक की जरुरत होगी !
- आपका GMAIL ADRESS डालने के बाद अपना (PASSWORD) डाले और आगे बढ़े !
- NEXT बटन CLICK करके आपका FIRST NAME आपका LAST NAME आपकी DATE OF BIRTH आपका GENDER आपकी COUNTRY आपका STATE और आपकी CITY से पूरी जानकारी भरने के बाद SAVE बटन पर CLICK करिये !

इस तरह आप अपना पर्सनल अकाउंट बना सकते है .

So Its Time To Change Join Your Indian social Network Join Inbook

- Inbook के अंतर्गत स्वास्थ सम्बन्धी समस्या को भी ध्यान में रखते हुए सभी Inbook सेंटर पर समय–समय पर हेल्थ केम्प का आयोजन किया जाता हैं जिसके अंतर्गत नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच एवं दवाईयां वितरित की जाती हैं।
- Inbook अप्लीकेशन से अगर आप जुड़ते हो तो इससे होने वाले प्रॉफिट का भी एक हिस्सा इन्ही Inbook शिक्षा और स्वास्थ में लगाया जाता हैं !

तो आज ही अपने मोबाइल के प्ले स्टोर से डाउनलोड कर प्द्इववा अप्लीकेशन और जुड़े आपके अपने स्वदेशी नेटवर्क से। यहाँ आप अपने स्वदेशी नेटवर्क से जुड़ने के साथ–साथ ही अप्रत्यक रूप से अपने समाज के सेवा कार्यो में सहयोग करेंगे

शूरवीरो की गाथा

हिन्दुंस्तान के इतिहास के बाजीराव अकेले ऐसे योद्धा थे जिन्होंने 41 लड़ाईया लड़ीं और एक भी नहीं हारीं।

बाजीराव का परिचय :

पेशवा बाजीराव का जन्म 18 अगस्त सन् 1700 को एक भट्ट परिवार में पिता बालाजी विश्वनाथ और माता राधाबाई के घर में हुआ था। उनके पिताजी छत्रपति शाहू के प्रथम पेशवा थे। पेशवा बाजीराव की पहली पत्नी का नाम काशीबाई था। पेशवा बाजीराव की दूसरी पत्नी का नाम था मस्तानी, जो छत्रसाल के राजा की बेटी थी। बाजीराव उनसे बहुत अधिक प्रेम करते थे और उनके लिए पुणे के पास एक महल भी बाजीराव ने बनवाया जिसका नाम उन्होंने मस्तानी महलश्रखा। सन् 1734 में बाजीराव और मस्तानी का एक पुत्र हुआ जिसका नाम कृष्णा राव रखा गया था।

पेशवा बाजीराव, जिन्हें बाजीराव प्रथम भी कहा जाता है, मराठा साम्राज्य के एक महान पेशवा थे। पेशवा का अर्थ होता है प्रधानमंत्री। इतिहास के अनुसार बाजीराव घुड़सवारी करते हुए लड़ने में सबसे माहिर थे और यह माना जाता है कि उनसे अच्छा घुड़सवार सैनिक भारत में आज तक देखा नहीं गया। बलिष्ठ, तेजस्वी, कांतिवान, तांबई रंग की त्वचा उनके व्यक्तित्व में चार चांद लगाती थी। न्यायप्रिय बाजीराव पूरी सेना को वे सख्त अनुशासन में रखते थे। अपने भाषण से वे सेना में जोश भर देते थे।

महाराणा प्रताप और शिवाजी के बाद बाजीराव पेशवा का ही नाम आता हैं जिन्होंने मुगलों से लंबे समय तक लोहा लिया। बाजीराव बल्लाल भट्ट एक महान योद्धा थे। निजाम, मोहम्मद बंगश से लेकर मुगलों और पुर्तगालियों तक को कई–कई बार शिकस्त देने वाले बाजीराव के समय में महाराष्ट्र, गुजरात, मालवा, बुंदेलखंड सहित 70 से 80 फीसदी भारत पर उनका कब्जा था। इतिहास में ऐसे कई वीर हुए हैं जिन्होंने मुगलों को दिल्ली तक ही समेट दिया था। उनमें से एक थे बाजीराव। हालांकि आरोप है कि भारत के ऐसे वीरों को आजादी के बाद के शिक्षामंत्रियों और वामपंथी इतिहाकारों ने बड़ी चालाकी से इतिहास से हटाकर मुगल इतिहास को महिमामंडित किया।

बाजीराव ने शिवाजी के नाती शाहूजी महाराज को गद्दी पर बैठाकर बिना उसे चुनौती दिए पूरे देश में उनकी ताकत का लोहा मनवाया था। देश में पहली बार श्हिन्दू पद पादशाहीश का सिद्धांत भी बाजीराव प्रथम ने दिया था। हालांकि जनता किसी भी धर्म को मानती हो उसके साथ वे न्याय करते थे। उनकी अपनी फौज में कई अहम पदों पर मुस्लिम सिपहसालार थे, जो युद्ध से पहले श्हर–हर महादेवश का नारा भी लगाना नहीं भूलते थे। अटक से कटक तक केसरिया लहराने का और हिन्दू स्वराज लाने का सपना जो छत्रपति शिवाजी महाराज ने देखा था उसे काफी हद तक पेशवा बाजीराव ने पूरा किया।

होलकर, सिंधिया, पवार, शिंदे, गायकवाड़ जैसी ताकतें जो बाद में अस्तित्व में आई, वे सब पेशवा बाजीराव बल्लाल भट्ट की देन थीं। ग्वालियर, इंदौर, पूना और बड़ौदा जैसी ताकतवर रियासतें बाजीराव के चलते ही अस्तित्व में आई। बुंदेलखंड की रियासत बाजीराव के दम पर जिंदा थी, छत्रसाल की मौत के बाद उनका तिहाई हिस्सा भी बाजीराव को मिला।

हिन्दुस्तान के इतिहास के बाजीराव अकेले ऐसे योद्धा थे जिन्होंने 41 लड़ाइयां लड़ीं और एक भी नहीं हारीं। वर्ल्ड वॉर सेकंड में ब्रिटिश आर्मी के कमांडर रहे मशहूर सेनापति जनरल मांटगोमरी ने भी अपनी किताब हिस्ट्री ऑफ वॉरफेयरश में बाजीराव की बिजली की गति से ते आक्रमण शैली की जमकर तारीफ की है और लिखा है कि बाजीराव कभी हारा नहीं। आज वो किताब ब्रिटेन में डिफेंस स्टडीज के कोर्स में पढ़ाई जाती है।

मुगलों के गढ़ दिल्ली के खिलाफ अभियान रू19–20 साल के उस युवा बाजीराव ने 3 दिन तक दिल्ली को बंधक बनाकर रखा था। मुगल बादशाह की लाल किले से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हुई। यहां तक कि 12वां मुगल बादशाह और औरंगजेब का नाती दिल्ली से बाहर भागने ही वाला था कि बाजीराव मुगलों को अपनी ताकत दिखाकर वापस लौट गए। ये घटना भंसाली की फिल्म में नहीं है।

दिल्ली पर आक्रमण उनका सबसे बड़ा साहसिक कदम था। वे अक्सर शिवाजी के नाती छत्रपति शाहू से कहते थे कि मुगल साम्राज्य की जड़ों यानी दिल्ली पर आक्रमण किए बिना मराठों की ताकत को बुलंदी पर पहुंचाना मुमकिन नहीं और दिल्ली को तो मैं कभी भी कदमों पर झुका दूंगा। छत्रपति शाहू 7 से 25 साल की उम्र तक मुगलों की कैद में रहे थे। वे मुगलों की ताकत को बखूबी जानते थे, लेकिन बाजीराव का जोश उस पर भारी पड़ जाता था।

धीरे–धीरे उन्होंने महाराष्ट्र को ही नहीं, पूरे पश्चिम भारत को मुगल आधिपत्य से मुक्त कर दिया था, फिर उन्होंने दक्कन का रुख किया। दक्कन में निजाम, जो मुगल बादशाह से बगावत कर चुका था, एक बड़ी ताकत था। कम सेना होने के बावजूद बाजीराव ने उसे कई युद्धों में हराया और कई शर्तें थोपने के साथ उसे अपने प्रभाव में लिया था।

इधर, उन्होंने बुंदेलखंड में मुगल सिपहसालार मोहम्मद बंगश को हराया। कई बार पेशवा से मात खा चुके मुगलों का हौसला कमजोर हो चुका था। 1728 से 1735 के बीच पेशवा ने कई जंगें लड़ीं, पूरा मालवा और गुजरात उनके कब्जे में आ गया। बंगश, निजाम जैसे कई बड़े सिपहसालार पस्त हो चुके थे।

10 दिन की दूरी बाजीराव ने केवल 500 घोड़ों के साथ 48 घंटे में पूरी की– बिना रुके, बिना थके। देश के इतिहास में ये अब तक 2 आक्रमण ही सबसे तेज माने गए हैं– एक अकबर का फतेहपुर से गुजरात के विद्रोह को दबाने के लिए 9 दिन के अंदर वापस गुजरात जाकर हमला करना और दूसरा बाजीराव का दिल्ली पर हमला।

अपनी इज्जत गंवा चुके मुगल बादशाह रंगीला ने निजाम से मदद मांगी। निजाम दक्कन से निकल पड़ा। इधर से बाजीराव और उधर से निजाम दोनों मध्यप्रदेश के सिरोंजी में मिले। लेकिन कई बार बाजीराव से पिट चुके निजाम ने उनको केवल इतना बताया कि वो मुगल बादशाह से मिलने जा रहा है, किसी युद्ध के लिए नहीं। निजाम को मराठाओं ने रास्ता दे दिया।

निजाम दिल्ली आया और उसने कई मुगल सिपहसालारों ने हाथ मिलाते हुए बाजीराव को धूल चटाने का संकल्प लेकर कूच कर दिया। लेकिन बाजीराव बल्लाल भट्ट दूरदर्शी योद्धा था। वह पहले से ही यह सब जानता था। वह अपने भाई चिमनाजी अप्पा के साथ 10,000 सैनिकों को दक्कन की सुरक्षा का भार देकर 80,000 सैनिकों के साथ फिर दिल्ली की तरफ निकल पड़ा। इस बार मुगलों को निर्णायक युद्ध में हराने का इरादा था ताकि वे फिर सिर न उठा सकें।

दिल्ली से निजाम की अगुआई में मुगलों की विशाल सेना और दक्कन से बाजीराव की अगुआई में मराठा सेना निकल पड़ी। दोनों सेनाएं भोपाल में मिलीं। 24 दिसंबर 1737 के दिन मराठा सेना ने मुगलों को जबरदस्त तरीके से हराया। निजाम ने अपनी जान बचाने के के लिए बाजीराव से संधि कर ली। इस बार 7 जनवरी 1738 को ये संधि दोराहा में हुई। मालवा, मराठों को सौंप दिया

गया और मुगलों ने 50 लाख रुपए बतौर हर्जाना बाजीराव को सौंपे।

चूंकि निजाम हर बार संधि तोड़ता था, सो बाजीराव ने इस बार निजाम को मजबूर किया कि वो कुरान की कसम खाकर संधि की शर्तें दोहराए। ये मुगलों की अब तक की सबसे बड़ी हार थी और मराठों की सबसे बड़ी जीत।

पुर्तगालियों के खिलाफ अभियान रूपेशवा बाजीराव बल्लाल भट्ट यहीं नहीं रुका, अगला अभियान उसका पुर्तगालियों के खिलाफ था। कई युद्धों में उन्हें हराकर उनको अपनी सत्ता मानने पर उसने मजबूर किया। पुर्तगालियों ने कई पश्चिमी तटों पर कब्जा कर लिया था। साल्सेट द्वीप पर उन्होंने अवैध तरीके से एक फैक्टरी बना दी थी और वे हिन्दुओं में जातिवाद बढ़ाकर धर्मांतरण का कार्य कर रहे थे। वसई युद्ध के बाद मार्च 1737 में पेशवा बाजीराव ने अपनी एक सेना चिमनजी के नेतृत्व में भेजी और थाना किला और बेस्सिन पर कब्जा कर लिया।

बाजीराव की मृत्यु रूकहा जाता है कि बाजीराव पेशवा की मृत्यु 28 अप्रैल 1740 को 39 वर्ष की आयु में दिल का दौरा पड़ने से हुई थी। उस समय वे इंदौर के पास खरगोन शहर में रुके थे। कुछ इतिहासकार कहते हैं कि बाजीराव का निधन मालवा में ही नर्मदा किनारे रावेरखेड़ी में लू लगने के कारण हुआ था।

अगर बाजीराव पेशवा कम उम्र में न चल बसते, तो न अहमद शाह अब्दाली या नादिर शाह हावी हो पाते और न ही अंग्रेज और पुर्तगालियों जैसी पश्चिमी ताकतें होतीं। बाजीराव का केवल 40 साल की उम्र में इस दुनिया से चले जाना मराठों के लिए ही नहीं, देश की बाकी पीढ़ियों के लिए भी दर्दनाक भविष्य लेकर आया। अगले 200 साल गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहा भारत और कोई भी ऐसा योद्धा नहीं हुआ, जो पूरे देश को एक सूत्र में बांध पाता।

Travel : Indore

रानी अहिल्या की नगरी इंदौर

हमारी पुस्तक इंक के हर संस्करण में हम कोशिश करेंगे की हमारे पाठकों को हर बार एक नए शहर का दौरा हम अपनी इस पुस्तक के माध्यम से करा सके।हमारे पहले संस्करण में हमने सोचा क्यों न आपको इंदौर जैसे इस खूबसूरत और ऐतिहासिक शहर के एक संक्षिप्त दौरे पर ले जाया जाये।आशा करते है कि आपको हमारी यह पहल पसंद आयेगी।

इंदौर में कई ऐतिहासिक इमारतें हैं, जैसे की राजवाड़ा का महल, लालबाग़ महल, छत्रीबाग़, फूटी कोठी, बड़ा गणपति, केंद्रीय संग्रहालय, गीता भवन मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर, खजराना गणेश मंदिर, और कांच मंदिर आदि है।यह इमारतें दशकों से शहर के गौरव में चार चाँद लगा रही है।जहां इतनी पुरानी इमारतें हैं, वही इंदौर में नई उद्योगों द्वारा नई इमारतें बनायीं जा रही है जोकि शहर को एक मिला–जुला अनुभव देती है।बात चाहे शिक्षा के क्षेत्र की हो या रोज़गार, इंदौर पुरे मध्य–प्रदेश के दिल के सामान काम करता है।

बीत गए वो दिन, जब इंदौर शहर की तुलना मुंबई से की जाती थी और शहर को मिनी–मुंबई कहा जाता था।आज इंदौर ने न केवल अपनी एक अलग पहचान बनायीं है बल्कि खुद को तेजी से हो रहे विस्तार के अनुरूप खुद में बदलाव भी लाये है। देश के सबसे स्वच्छ शहर का स्थान लगातार तीसरी बार बनाए रखने के कारण विभिन्न राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर प्रशंसा हासिल की।

हमारी पुस्तक इंक के इस पहले संस्करण में, हमने आपको इस खूबसूरत और ऐतिहासिक शहर के एक संक्षिप्त दौरे पर ले जाने के बारे मे सोचा।आशा करते हैं कि आपको हमारी यह पहल पसंद आयेगी।

इंदौर, नाम सुन कर ही यहाँ बनाये जाने वाले उत्पादों का ध्यान आता है। फिर चाहे वो यहाँ के मीलों में बना कपडा हो या फिर इंदौर का स्पेशल पोहा–जलेबी का नाश्ता।यह शहर, जो की कई राजाओं की रियासत रह चूका है, आज भी माँ अहिल्या की नगरी के नाम से जाने जाने में अपनी शान समझता है। दशकों से कई शहरों को सभ्यता का पाठ शांति से पड़ा रहा यह शहर, आज कई नामचीन और विश्वयापी संस्थाओ का हेडक्वार्टर है।

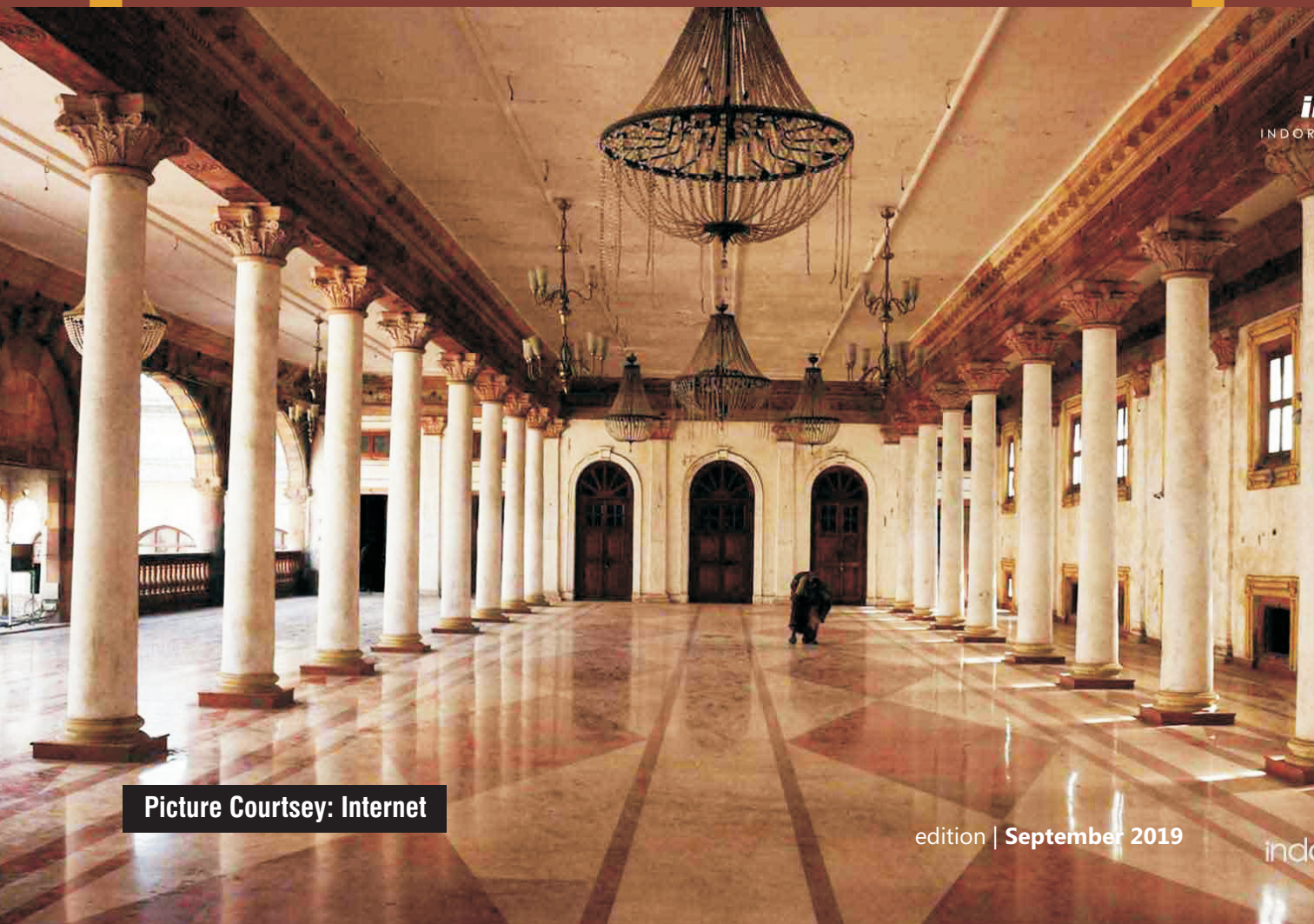

Picture Courtsey: Internet

इंदौर ने न केवल अपनी एक अलग पहचान बनायीं है बल्कि खुद को तेजी से हो रहे विस्तार के अनुरूप खुद में बदलाव भी लाये है।

पिछले कुछ सालों में इंदौर ने आस पास के शहरों में रहने वाले हज़ारों लोगों के लिए रोज़गार के नए अवसर बनाये। लोगों की मानें तो इंदौर को कई सालों पहलें ही मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी घोषित किया जा चूका है।

हालाँकि, सरकार ने कभी भी लिखित में ऐसा नहीं कहा नाहि कहेगी परन्तु सत्य तो अटल है।

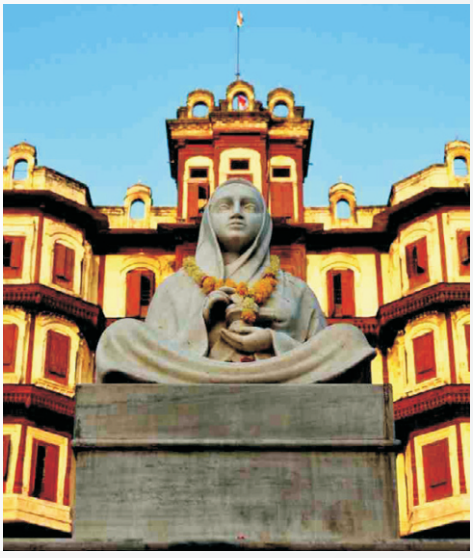

पर्यटन की दृष्टी से भी इंदौर के आस–पास कई पर्यटन स्थल है, विंध्याचल पर्वत श्रंखला में स्थित प्राक प्रकृतिक स्थान जैसे पाताल–पानी का झरना, गोमटगिरी, देवगुराड़िया, नेहरू पार्क, रीजनल पार्क, तिंछा फॉल, जानापाव, चोरल डेम, सीतलामाता वाटरफॉल, जाम गेट, यशवंत सागर डेम, कालाकुंड, रालामंडल, उज्जैनी, नर्मदा – क्षिप्रा संगम और कजलीगढ़ विशेष आकर्षण का केंद्र है।

तो फिर मिलते है इंदौर में।

All Picture's Courtsey: Internet

Avni Cleaning & Pest Control Services Pvt. Ltd.

NSIC - CRISIL RATED
*Current rating and validity available on www.crisil.com

SERVICES

- Mosquito Control
- Rodent Control

PRE AND POST CONSTRUCTION TERMITE CONTROL

Water Tank Cleaning

Our prestigious Client:

Hospital, Hotels, Banks, Municipal Corporation, Railways,Toll Plaza etc.

House Keeping and House Cleaning like Sofa Cleaning, Mattress Cleaning etc.

General and Spacial Pest Control, Herbal and Non-Herbal.

Always with You at

9893056503 & 9424975475

meet us at: Ist floor Rajendra Singh market
INFRONT OF RELIANCE PETROL PUMP NH-7BARA REWA (M.p.) 486001

OFFER

Flat 10% Discount on spot booking

Legal

"GST "ONE NATION, ONE TAX, ONE MARKET."

Before implementation of Goods and Service Tax (GST), Indian taxation system was a farrago of central, state and local area levies. By subsuming more than a score of taxes under GST, road to a harmonized system of indirect tax has been paved making India an economic union

WHAT IS GST?

GST is an Indirect Tax which replaced many Indirect Taxes in India. The Goods and Service Tax Act was passed in the Parliament on 29th March 2017. The Act came into effect on 1st July 2017.
Goods and Service Tax (GST) is an indirect tax levied on the supply of goods and services. GST is one indirect tax for the entire country. So, Goods and Service Tax has replaced many indirect tax laws that previously existed in India.

Adv Vinay Pitalia
Associate: Singhania & co.

GST Regime

Under the GST regime, the tax is levied at every point of sale. CGST and SGST is collected on Intra State Sales (sales within the state) whereas IGST is collected on Inter State Sales.
GST is a comprehensive, multi-stage, destination-based tax that is levied on every value addition

Multi-stage: There are multiple change-of-hands an item goes through along its supply chain: from manufacture to final sale to the consumer.
For Example: Purchase of raw materials; Production or manufacture; Warehousing of finished goods; Sale to wholesaler; Sale of the product to the retailer and; Sale to the end consumer. GST is levied on each of these stages which makes it a multi-stage tax.

Value Addition: The manufacturer who makes biscuits buys flour, sugar and other material. The value of the inputs increases when the sugar and flour are mixed and baked into biscuits. The manufacturer then sells the biscuits to the warehousing agent who packs large quantities of biscuits and labels it. That is another addition of value after which the warehouse sells it to the retailer. The retailer packages the biscuits in smaller quantities and invests in the marketing of the biscuits thus increasing its value. GST is levied on these value additions i.e. the monetary value added at each stage to achieve the final sale to the end customer.

Destination-Based: Consider goods manufactured in Madhya Pradesh and are sold to the final consumer in Karnataka. Since Goods & Service Tax is levied at the point of consumption. So, the entire tax revenue will go to Karnataka and not Madhya Pradesh.

TRANSACTION	NEW REGIME	OLD REGIME	
Sale within the State	CGST + SGST	VAT + Central Excise/Service tax	Revenue will be shared equally between the Centre and the State
Sale to another State	IGST	Central Sales Tax + Excise/Service Tax	There will only be one type of tax (central) in case of inter-state sales. The Centre will then share the IGST revenue based on the destination of goods.

Goods and Services Tax Council (GSTC) is a Constitutional Body created for taking policy decisions about introduction and implementation of GST.

After the 32nd GST Council meeting held on 10.01.2019, there would be two threshold limits for exemption from registration for suppliers of Goods i.e. ₹ 40 lakhs and ₹ 20 lakhs. States would have an option to decide the threshold. However, the threshold for registration for Service Providers would continue to be ₹ 20 lakhs and in case of Special Category States at ₹ 10 lakhs. This would be made effective from 01.04.2019.

The introduction of e-way (electronic way) bill is a monumental shift from the earlier "Departmental Policing Model" to a "Self-Declaration Model". It envisages one e-way bill for movement of the goods throughout the country, thereby ensuring a hassle free movement for transporters throughout the country. The e-way bill system has been introduced nation-wide for all inter-State movement of goods with effect from 1st

The implementation of the Goods and Services Tax (GST) has created a common national market and reduced the overall tax burden on goods. It is expected to reduce costs in the long run on account of availability of GST input credit, which will result in the reduction in prices of services.

Special thanks to our patron

SINGHANIA & CO., LLP

Advocates & Solicitors

**Give a man a fish and you feed him for a day;
teach a man to fish and you feed him for a lifetime**

Investing in the education system of rural India, benefits us all. We could not accomplish our goals without the support, involvement and enthusiasm of Singhania & Co. LLP.

Singhania & Co. LLP has selflessly sponsored the establishment and operations of 15 Inbook cafes (libraries) and 2 Inbook Vidhyakul Schools in 12 Districts of Madhya Pradesh, Rajasthan and Maharashtra.

This contribution makes a longlasting and remarkable impression on the lives of many families who now have access to education and knowledge, making a permanent contribution in their lives.

मेरी कलम से

माता पिता का त्याग और वृदावस्था में उनके साथ व्यवहार

Pradeep kumar Jain
Managing partner
Singhania & Co. Mumbai

एक समय के रेमंड मैन आज दाने दाने को मोहताज. उनके चित्र को देख के समझा जा सकता हे की बो कितने निराश महसूस कर रहे होंगे।

पूरी दुनिया को अपने प्लेन से नापने वाले डॉ. विजयपत सिंघनिया के पास अपनी खुद की कार नहीं हे, उनके वकील ने इलज़ाम लगाया की उनके क्लाइंट ने दस हज़ार करोड़ के शेयर अपने बेटे के नाम किये लेकिन उन्हें पैसे पैसे के लिए मोहताज कर दिया गया? कुछ दिन पहले उनके परिवार के दूसरे सदस्यों (अल्प आयु) ने उन पर पक्षपात का आरोप लगाया था.

मुझे नहीं पता की दूसरे पक्ष की कहानी क्या हे लेकिंन फिर भी क्या वो इसके लिए जिम्मेदार है?क्या उनके भरोसे को तोडा गया हे वो भी उस समाज में जहा पिता को भगवान का दर्जा दिया जाता है।

ऐसी क्या परिस्थिति आ गयी की सरकार को माता पिता भरण पोषण कानून बनाने पड़ रहे है, और कोई बुजुर्ग इस कानून के अंतर्गत पोषण मांगता भी है तो क्या उसे बच्चो का प्रेम और सम्मान मिलेगा?

तो क्या ये सब मूल्यों की दुहाई मध्यम वर्ग के लिए?

क्या लक्ष्मी के सामने मूल्यों का कोई मूल्य नहीं हे?

मैंने सुना की जब लक्ष्मी अच्छे हाथों में आती हे तो वह वहां रहना चाहती हैं और बढ़ना चाहती हैं तो क्या ये गलत हैं?

कौन हैं इसके लिए जिम्मेदार, क्या माता पिता?क्या संतान?या फिर भारतीय समाज? या फिर इंसान के कर्म?

मेरे हिसाब से इसके लिए सब पक्ष जिम्मेदार हैं।

वो माता पिता जो जिंदगी भर अपनी औलाद के लिए ही कमाते हैं की उसको सुविधायें मिलें चाहें उसके लिए उनको अनैतिक साधनो और अन्याय का सहारा लेना पड़े. वो भूल जाते हैं उनका समाज के लिए भी कुछ कर्तव्य हैं, काश अगर वो 100 रुपया अपने बच्चो पे खर्च करते तो 5 रुपया अनजान बच्चो पे भी खर्च कर देते. अगर ऐसा करे तो शायद ऐसे दिन ना आये!

वो बच्चे जो ये भूल जाते हैं की उनके माता पिता ने उनके लिए अपने खून को पानी बना दिया और खुद की जिंदगी को भूल गए. वो भूल जाते है की वो आज वो ही कर रहे जो उनके माता पिता ने किया और कल वो वोहि भोगेंगे जो उनके माता पिता भोग रहे है। कर्म हमेशा लौट के आता है।

अपना भारतीय समाज जो बाते बहुत बड़ी बड़ी करता है लेकिन हमको ये नहीं सिखाता की समाज एक बड़ा परिवार है कभी उसके लोगो की सहायता करना चाहिए। जो सिर्फ अगली पीडिओ के लिए संचय करना सिखाता है। अमेरिका में माता पिता को भगवान नहीं समझा जाता है, ना ही माता पिता सिर्फ बच्चो के लिए कमाते है इसलिए सबसे ज्यादा दानदाता वहा है।

हमको समझना होगा पैसा पानी की तरह है, बहता रहेगा तो ताज़ा रहेगा, भगवान की कृपा एक हवा की तरह है जो सामने वाली खिड़की से आती है और यदि हम पीछे की खिड़की खोल दे (दुसरो की सहायता कर) तो ये कृपा हमेशा बनी रहती है. कुछ लोग सोचते है धन आएगा तो करेंगे, अरे धन नहीं तो जो है उसे समाज को दो, वो आपकी मुस्कुराहट, आपका समय भी हो सकता है। मैं तो समझ गया, और आप?

जय हिन्द

Government Schemes

आधार का आधार और उपयोगिता

आज भारत में ढेरों सरकारी योजनाएं चल रही हैं।इनमे से सबसे महत्वर्पूण। कही जाती हैं आधार कार्ड का होना।आज आधार कार्ड किसी भी व्यक्ति की पहचान का एक बहुमूल्य हिस्सा हो गया है।चाहे सरकारी योजनाओं का लाभ लेना हो या फिर बैंक में अकाउंट खोलना हो, आधार कार्ड हर जगह मान्य हैं। यह एक क्रनतिकारी कार्ड हैं जो कि कई सारी आने वाली सरकारी योजनाओं में भी धारक को लाभानवित करता रहेगा। तो जानते हैं आधार और इससे जुडी कुछ रोचक बाते।

क्या हैं आधार कार्ड?

आधार कार्ड, 12 नम्बरों का पहचान पत्र हैं जो कि भारत सरकार की एक एजेंसी यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया UIDAI द्वारा, धारक के उँगलियों की छाप, आँखों की पहचान, फोटो और उम्र और पते की जानकारी एकत्रित करके कुछ ही दिनों में धारक को डाक द्वारा भेजी जाती है।

आधार कार्ड सिर्फ भारतीय मूल के नागरिकों के लिए है। इसमें चेंजेस करवा सकते है अगर कुछ गलत छप गया हो तो, हालाँकि, सारी गलतियों में एक बार ही सुधार किया जा सकता है। सुधार के लिए, आधार केंद्र पर जाकर फॉर्म भरकर जमा करना होता है। इसके पश्यात, कुछ दिनों में नया आधार कार्ड धारक को डाक द्वारा मिल जाता है।

इतिहास

सन् 1999 के कारगिल युद्ध के बाद से ही भारत सरकार भारत मूल के नागरिकों के लिए एक विशेष तरह के पहचान पत्र बनाने में जुटी थीं। हालाँकि, पहले यह सुविधा सिर्फ सरहद वाले इलाकों में रहने वाले भारतियों के लिए लाने के बारे में विचार किया जा रहा था। परन्तु जैसे–जैसे कार्य में प्रगति हुई, इस सुविधा को प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य करने पर भी विचार किया गया।

चाहे सरकारी योजनाओं का लाभ लेना हो या फिर बैंक में अकाउंट खोलना हो, आधार कार्ड हर जगह मान्य हैं। यह एक क्रान्तिकारी कार्ड हैं जो कि कईं सारी आने वाली सरकारी योजनाओं में भी धारक को लाभानवित करता रहेगा।

सन् 2014 आते–आते, आधार कार्ड को आधार नाम मिल चूका था ।देश के नागरिकों में इसको लेकर उत्सुकता आ चुकी थीं। लोग ज़्यादा से ज़्यादा इस कार्ड के बारे में चर्चा करना और जानकारी एकत्रित करना चाहते थे।सन् 2014-15 में आधार कार्ड बनने लगे और हर आम नागरिक इसके लिए आगे आया। शुरुआती दौर में लोगों ने लम्बी कतार में खड़े होकर भी आधार कार्ड बनवाय।

तब से लेकर अब तक आधार कार्ड में कई सारे बदलाव भी आये।जैसे पहले आधार कार्ड को मोबाइल फोन में लगने वाली सिम कार्ड खरीदने तक में अनिवार्य कर दिया गया था। आज इतने कठोर नियम नहीं है। हालाँकि आधार की अनिवार्यता इससे कम नहीं हुयी। आज भी आधार एक विश्वसनीय दस्तावेज़ के रूप में मान्य है।

आज आधार बनाने में इतनी मुश्किलों का सामना नहीं करना होता है।अगर किसी व्यक्ति का आधार कार्ड बनवाना हो तो अपने नज़दीकी आधार कार्ड केंद्र पर जाकर फॉर्म आसानी से मिल जाता है।यह सुविधा अब नवजात से लेकर व्यसक के लिए मान्य है।हर शहर में आधार केंद्र उपलब्ध है।यहाँ जाकर नागरिक अपना आधार कार्ड आसानी से बनवा सकते है।

आधार कार्ड की उपयोगिता

वैसे तो आधार कार्ड की कई सारी उपयोगिताएं हैं,

पर इनमे से सबसे महत्वपूर्ण हैं आधार का बैंक खाते से जुड़ना। आधार कार्ड की एक उपयोगिता यह भी हैं की आम जनता इस कार्ड की मदद से प्रधानमंत्री जन धन योजना का लाभ पा सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत शूल्क मुक्त शून्य बैलेन्स बचत खाता, रूपय कार्ड, दुर्घटना बीमा आदि लाभ पाऐ जा सकते हैं।

आधार कार्ड में धारक का नाम, पता, जन्म तारीख जैसी कई महत्पूर्ण जानकारियां होती हैं,

साथ ही, आधार कार्ड पर 12 अंक का एक यूनिक आधार कोड होता हैं, जो की हर कार्ड धारक

के लिए अलग होता हैं।

मासिक पेंशन और प्रोविडेंट फण्ड :

नए नियमों के अनुसार एक व्यक्ति को अपना पेंशन और प्रोविडेंट फण्ड अकाउंट आधार कार्ड से लिंक करना अनिवार्य है। जिस भी व्यक्ति के खाते से आधार कार्ड लिंक होगा उसके खाते में पैसे जमा होंगे।

पासपोर्ट और मतदाता पहचान पत्र

पासपोर्ट बनवाने के लम्बी प्रक्रिया से आधार कार्ड आपको बचा सकता है वह आवेदक जो आधार कार्ड का इस प्रक्रिया के लिए उपयोग करते है उन्हें पासपोर्ट मात्र 10 दिनों के अंदर मिल सकता है। वर्तमान बदलाव के चलते आधार, पासपोर्ट बनवाने के लिए एक अनिवार्य दस्तावेज़ बन चूका है

9 मार्च 2015 से सभी मतदाता पहचान पत्र आधार से लिंक कर दिए गए है जिससे की फर्जी मतदाता की छटनी की जा सकें।

अद्वितीय विशेषता

आधार प्रणाली में बायोमेट्रिक लॉक एक ऐसी सुविधा है जो उपभोक्ताओ को अपने बॉयोमेट्रिक को सुरक्षित रखने में सहायक होती है आधार धारक अपने बायोमीट्रिक्स को सुरक्षित करने के लिए न्प्क।प् की वेबसाइट या एप पर इस ऑप्शन का चुनाव कर सकते है एक रेजिस्टर्ड मोबाइल नं आवश्यक है इस सेवा का लाभ लेने के लिए।

JOHNY

• HOT DOG •

EST 1982

TASTE OF INDORE

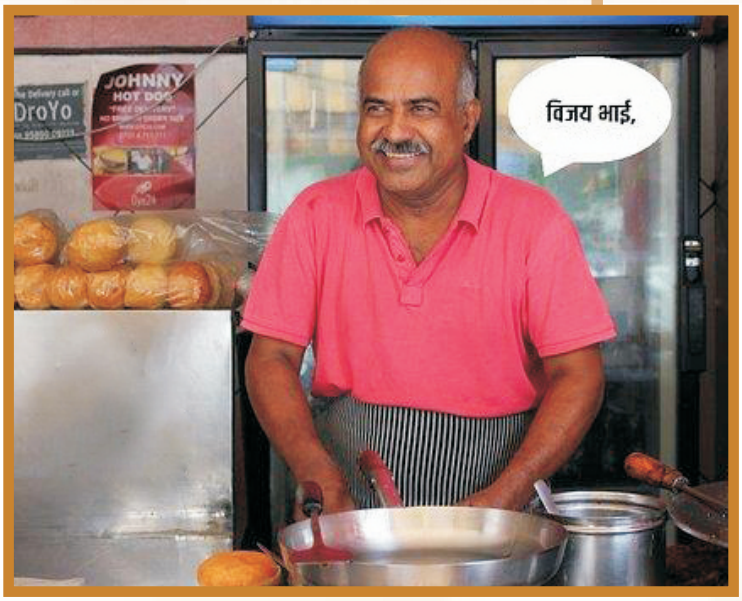

shop no 51-52, 56 Dukan St, Indore, Madhya Pradesh

सिखने की कुछ बातें कविताएं और कहानियां

ज़रा सोचिए...

अचानक कह दिया गया कि आपके पास जो नोट है।वो नहीं चलेंगे। बदलने के लिए 50 दिन है।आप घबरा गए। और कोशिश करने लगे कि किसी भी तरह जल्द से जल्द आपके नोट बदल जाए।

ज़रा सोचिए एक दिन वो आनेवाला है कि आपसे कह दिया जाएगा कि आपके पास जो कुछ है, कुछ नहीं चलेगा।जिसे बदलने के लिए 1सेकंड भी नही मिलेगा।तो सोचिये क्या होगा उस दिन आपका।

उस दिन के लिए सिर्फ वो ईकट्ठा करें ....! जो वहाँ चलेगा

मनुष्य का मन...

हमारे मन का एक बहुत बड़ा गुण है, कि जो हमारे पास होता है, ये मन उसकी फिक्र कभी नहीं करता। और जो हमारे पास नहीं होता है, हमेशा हमारा मन उसी की आकांक्षा से भरा रहता है।मछली जीवन भर जल में रहती है, लेकिन उसे पानी का मूल्य तब तक पता नहीं लगता, जब तक कि उसे पानी से बाहर निकाल नहीं दिया जाता है।

'मछली को जैसे ही पानी से बाहर किया जाता है, तड़पने लगती है।तब उसे पता लगता है, कि जल ही उसका जीवन है। ठीक उसी तरह हमारा भी, जब तक उम्र का अन्तिम पड़ाव न आ जाये, तब तक हमें भी ये एहसास नहीं होता, कि हमारे पास कितना बहुमूल्य जीवन था।

उस दिन के लिए सिर्फ वो ईकट्ठा करें....! जो वहाँ चलेगा

-प्रशांत सिंह राजपूत, इंदौर

-वंदना नाशिक्कर, इंदौर

शिक्षा...

शिक्षा से ही यह सारा संसार हैं

शिक्षा का हर तरफ प्रचार प्रसार हैं

इसलिए तो प्रगति की और अग्रसर यह संसार

ज्ञान देने वाली होती हैं ज्ञान दायनी

हमारी पहली गुरु होती हैं हमारी जननी

शिक्षा का महत्व उनसे पूछो जो निरक्षर हैं ,

शिक्षा से अंजान हैं इसलिए तो वह अपने जीवन में बेबस हैं लाचार हैं।

शक्षिा एक इंसान को सफल और समझदार बनाती हैं

शिक्षा ही एक व्यक्ति,एक परिवार और एक देश को उन्नति की ओर ले जाती हैं।

शिक्षा का हम सभी के जीवन में बहोत बड़ा योगदान हैं

बिन शिक्षा के हम सभी नादान हैं।

शिक्षा,सीख,ज्ञान यह हम अपने बड़ों से पाते हैं ओर अपने साथ साथ आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं।

आओ हम सब मिलकर Each one teach one का प्रण करें।

शिक्षा हर इंसान का अधिकार हो
शिक्षित ओर शक्षर लोगो से जगमगाता यह संसार हो।

A GOOD IDEA
BECOME A GREAT IDEA
WHEN YOU LET IT OUT.

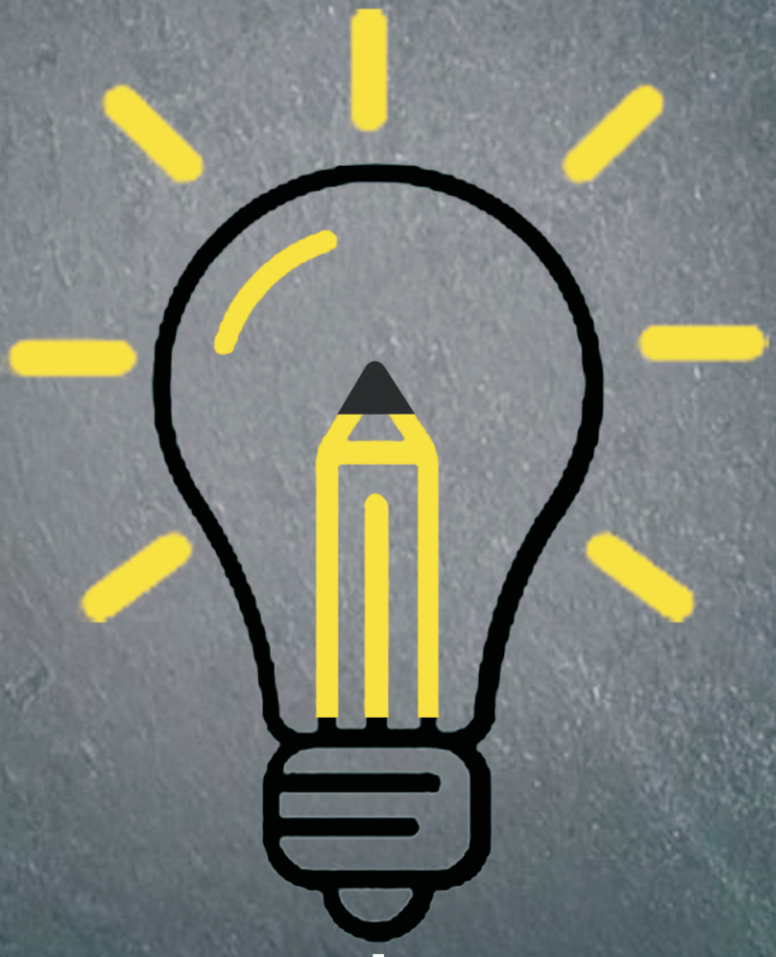

WHAT WE DO

- ADVERTISING
- BRANDING
- PRINT MEDIA
- CORPORATE IDENTITY

Build your Business with our all Design

9903497036
8017250012
aviruproy.arena@gmail.com

भारतीय सामाजिक नेटवर्क

जरा सोचे और विचार करे ?

Real Indian Social Networking Site

डाउनलोड केर **Inbook** App प्ले स्टोर से ! (लिंक : http://bit.ly/2kXuViU)

या वेबसाईट विजिट करे : www.inbook.in